M.A. Semester - I
Philosophy CC - 03

Prof. Ragini Kumari
Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Aristotle Criticism of Plato's Theory of Ideas
(Part - I)

ग्रीक दर्शन के पुर्ण- निर्माणकाल में Plato तथा Aristotle का नाम समस्त दार्शनिकों के बीच सम्मान से लिया जाता है। ग्रीक दर्शन के इतिहास में Plato ही सबसे पहला दार्शनिक है जिसने एक ऐसे सर्वतोमुखी और परिपूर्ण दर्शन की स्थापना करने का प्रयत्न किया जो दर्शन के सभी पक्षों की समुचित व्याख्या ही नहीं करता, वरन् तत् सम्बन्धी समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत करता है। Plato का दर्शन एक मौलिक दर्शन है जिसमें प्राचीन विचारों को आत्मसात कर एक नवीन दर्शन की सृष्टि की गई है।

जहाँ तक Aristotle का सवाल है इन्होंने अपने दर्शन का विकास Plato के दार्शनिक त्रुटियों के आधार पर किया है। Plato के Academy का शिष्य होने के बावजूद भी तथा Plato के दर्शन से अत्यन्त प्रभावित होने के कारण भी उसने अपने दार्शनिक गवेषणा के अन्तर्गत Plato की भरपूर आलोचना की है तथा उसके दार्शनिक त्रुटियों का अपने ढंग से समाधान करते हुए अपने दर्शन का विकास किया है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि इस तथ्य को कभी इनकार नहीं किया जा सकता है कि Aristotle अपनी दार्शनिक पृष्ठभूमि Plato से प्राप्त किया है। अतः Aristotle की दार्शनिक पृष्ठभूमि Plato की देन है।

दोनों ही अपने दर्शन में परमसत्ता की समस्या से परिलक्षित रहे हैं। Plato इसके लिए विज्ञान (Idea) को प्रस्तुत करता है तथा इसके अन्तर्गत कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों को निर्दिष्ट करता है। Aristotle, Plato के Academy का शिष्य Plato के इस मत से सहमत नहीं होता है। वास्तव में Aristotle के द्रव्य की कल्पना Plato के द्रव्य से पूर्णतः भिन्न है।

Plato ने अपने पारमार्थिक और व्यवहारिक जगत में इतना अधिक भेद उत्पन्न कर दिया था कि दोनों में किसी प्रकार के सम्बन्ध की सम्भावना ही नहीं रही और Aristotle के अनुसार Plato का सबसे बड़ा दोष उसका परमार्थ तथा व्यवहार का यही द्वैतवाद है। परमार्थ तथा व्यवहारिक कल्पना अपराध तो नहीं है और यह किसी-न-किसी रूप में स्वयं Aristotle को मान्य है, किन्तु इसमें वास्तविक अपराध है। परमार्थ तथा व्यवहार का अन्तर में बड़ा भेद है। Aristotle ने अपने आलोचना के सन्दर्भ में बतलाया है कि Plato ने पदार्थ (परमार्थ) को व्यवहार से बिल्कुल अलग उठाकर रख दिया है। Plato का परमार्थ है विज्ञान (Idea) और व्यवहार है इन्द्रियानुभव (Sense Experience)। Plato ने वस्तुजगत (World of Things) को विज्ञान ~~जगत~~ जगत से (World of Ideas) से बिल्कुल भिन्न और असत्य मान लिया है, जिसके फलस्वरूप विज्ञान जगत ही एकमात्र सत् और वस्तुजगत सर्वथा असत् बन गया है। Aristotle भी अपने दर्शन में विज्ञान का महत्व पूर्णरूप से मानता है। शुद्ध सत् ही शुद्ध चित है, किन्तु साथ ही विज्ञान जगत को वस्तुजगत से भिन्न न कर उसी में अनुभूत मानता है। परमार्थ-व्यवहार में अन्तर्भूत है व्यवहार के परे, उससे अत्यन्त भिन्न नहीं है, ऐसा Aristotle का मत है। इससे स्पष्ट होता है कि Aristotle के अनुसार विज्ञान की प्रधानता होते हुए भी वस्तुजगत Plato की सत्ता अक्षुण्य है।

इस प्रकार Aristotle, Plato की आलोचना के आधार पर अपने द्रव्य धारणा का विकास करता है। डा० चन्द्र शर्मा ने अपनी पुस्तक में स्पष्ट रूप से लिखा है कि —
"Aristotle ने Plato के विज्ञानवाद के खण्डन में अपनी सारी शक्ति लगायी है।" पाश्चात्य दर्शन में Aristotle का तत्वविज्ञान इसी खण्डन के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुआ है। 'W. T. Stace' ने स्पष्ट लिखा है —
'Aristotle's metaphysics theory grows naturally out of his polomic against Plato's theory of Ideas.'
(A Critical Hist. of Greek Phil. P. 565)

To be continued

पुनः Aristotle ने Plato के विज्ञानवाद के विरुद्ध एक आक्षेप लगाते हुए कहा है कि Plato के अनुसार विज्ञान विशेषों (Particulars) के पूर्ववर्ती कारण है। लेकिन इस सम्बन्ध में Aristotle का कहना है कि वस्तुस्थिति में विज्ञान पूर्ववर्ती न होकर परवर्ती अनुकृतियाँ हैं, अथ परिवर्तित होने के कारण ये विशेष वस्तुओं के कारण कभी भी नहीं हो सकते हैं। अतः Aristotle अपना निष्कर्ष देता है कि वस्तुस्थिति में विज्ञान विशेष के कारण न होकर केवल उनके अनुकरण मात्र हैं।

To be continued.....